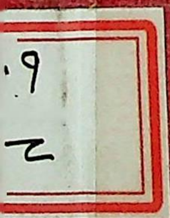
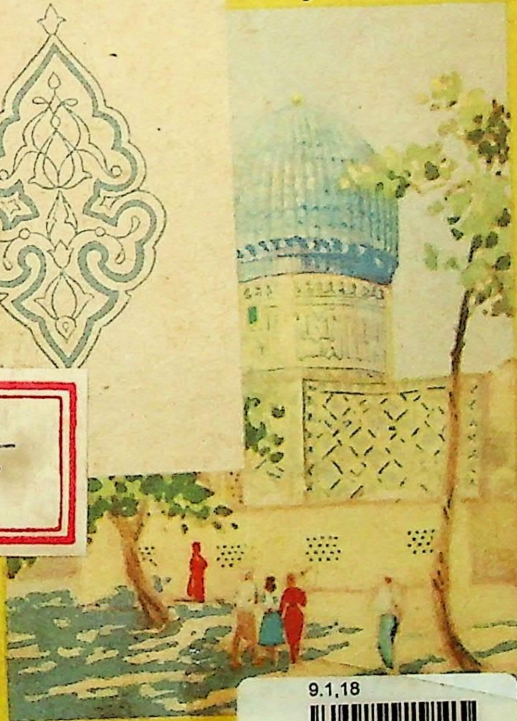
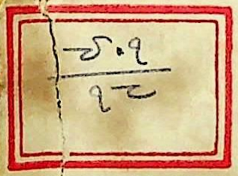
15



समरक़न्द











समरक़न्द

ज़राफ़शान नदी की घाटी में बसा समरक़न्द नगर मध्य एशिया के सबसे प्राचीन नगरों में से है। आज वह उज़्बेकिस्तान का एक महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक केन्द्र बना हुआ है। इस शहर का इतिहास दो हज़ार वर्ष का है।

यूनानियों ने इस नगर को मरकन्दा कहा था और चीनियों ने सा-मो-गियेन। अपने लम्बे अर्से के जीवन में इस नगर ने कितनी ही ऐतिहासिक घटनाएं देखी हैं। समरक़न्द ने सिकन्दर महान का रिसाला देखा, अरब विजेताओं का आक्रमण सहा, और चंगेज़खान की बर्बर फ़ौजों ने इस नगर की ईंट से ईंट बजा दी थी। तैमूर लंग ने इसे अपनी विशाल सलतनत की राजधानी बनाया। उसने इसे एक ऐसा शहर



बनाने की योजना बनायी जिसकी शोभा और गरिमा की चकाचौंध के आगे संसार के सर्वविख्यात नगर फीके पड़ जायें। समरक़न्द और उसके इर्द-गिर्द आलीशान इमारतें खड़ी की गयीं, लम्बे चौड़े बाज़ार बनाये गये और कारीगरों-कलाकारों की कितनी ही बस्तियां बसायी गयीं।

मावरा अन-नहर का सुलतान और तैमूर के पोते उलूग़बेक के शासनकाल में काफ़ी निर्माण कार्य हुआ। इस बड़े विद्वान के ज़माने में समरक़न्द एक समृद्ध सांस्कृतिक केन्द्र बन गया। ऐसे नये भवन निर्मित हुए जो उज़्बेक संस्कृति के शाश्वत स्मारक थे। अधूरे भवन पूरे किये गये। वाणिज्य और व्यवसाय का विस्तार किया गया।

प्राचीन स्थापत्यकला के कितने ही भव्य स्मारक आज तक सुरक्षित हैं।

समरक़न्द के प्राचीन भवन। समरक़न्द के प्राचीन भवन क्या हैं, प्राचीन गृहशिल्पियों के सदियों के अनुभव एवं महती प्रतिभा की गाथाएं हैं। ये गृहशिल्पी आम जनता के थे। उनके सधे हुए हाथों ने ऐसी योजनाएं कार्यान्वित की हैं कि जिन्हें देखकर दंग रह जाना पड़ता है।

प्राचीन समरक़न्द-अफ़्रांसियाब शहर वर्तमान शहर के उत्तरी छोर पर बसा था। समय समय पर यहां पुरातत्व की जो खोज की गयी उससे यह पता चला कि पुराना समरक़न्द

मध्य एशिया का एक बहुत बड़ा वाणिज्य एवं सांस्कृतिक केन्द्र था। तेरहवीं शताब्दी के शुरू में चंगेज़खान की फ़ौजों ने पुराने शहर को धूल में मिला दिया था। इसके बाद वर्तमान स्थल पर एक नया शहर बसा और बढ़ा।

शहर के अन्दर जो प्राचीन भवन हैं उनमें सबसे महत्त्व के हैं वे भवन जो रेगिस्तान चौक के इर्द-गिर्द बने हैं। मध्ययुगीन नगर-संयोजन का यह एक ज्वलन्त उदाहरण है। चौक के तीन ओर मदरसों की भारी इमारतें खड़ी हैं।

इनमें से पहला मदरसा, उलूग़बेक ने सन् १४१७ और १४२० के बीच बनवाया। काल के प्रताडनों से इस इमारत के काफ़ी हिस्से टूट-फूट चुके हैं। इसके चार दरवाजे हैं जिनपर पहले चमकीले खपड़े लगे थे। चारों कोनों पर चार मीनारें थीं जिनके ऊपर खरबूज़ानुमा गुम्बद बने थे। अन्दर का आंगन दुमंजिली मेहराबों से घिरा है जिनके बरामदों में मदरसे के छात्रों के रहने के कमरे (हुजरा) थे। प्रधान फाटक चौक की ओर खुलता है। फाटक की सजावट रात के आसमान के रूप में की गयी है। इमारत को सजाने में शिल्पियों ने चमकीली ईंटों, मुनब्बतकारी, संगमरमर की नक़्क़ाशी और मुलम्मे से काम लिया है। इन कलाओं में उन कारीगरों को कमाल हासिल था। उस ज़माने के लेखक हमें बताते हैं कि उलूग़बेक के ज़माने में मदरसे में गणित और खगोलविज्ञान की शिक्षा

धार्मिक विधि-विधानों की शिक्षा के साथ साथ दी जाती थी।

उलूग़बेक मदरसे के सामने खड़ा है शेरदार मदरसा। समरक़न्द के सुलतान यलंगताश बीय बहादुर (सन् १६१६-१६३६) की आज्ञा से यह मदरसा बना। इसके फाटक पर शेरों और हिरनों की मूर्त्तियां उगते सूरज की किरणों में चमचमाती-सी बनायी गयी हैं। इसी कारण मदरसे का यह नाम पड़ा। इसका प्रधान स्थपति था अब्दुल जब्बार। उसने उलूग़बेक मदरसे के ख़ास दरवाज़े और बनावट की बड़ी हद तक नक़ल की।

तिलाकारी मदरसा रेगिस्तान के उत्तरी भाग में बना है। इसका निर्माण सन् १६४६-६० में हुआ। इसमें मदरसे के अलावा एक बड़ी जामा मसजिद भी है। इसकी कारीगरी में बड़ी मात्रा में सोना काम में लाया गया है, इसीलिए इसका यह नाम पड़ा। प्रधान फाटक का ऊपरी हिस्सा उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में टूट गया था। बाद में उन्हीं सामग्रियों से उसे फिर से बनाया गया।

ताशक़न्द सड़क के छोर पर तैमूर की जामा मसजिद के शानदार खंडहर हैं। सन् १३९९-१४०४ में बनी इस मसजिद का नाम तैमूर की बड़ी बेगम के नाम पर बीबी खानुम मसजिद रखा गया था। इसके जो हिस्से अब तक बचे हैं वे पहले छतदार बरामदों से जुड़े हुए थे। इनको सहारा

देने के लिए संगमरमर के खंभे बने थे। यह इमारत इतनी बड़ी थी और स्थापत्यकला की बारीक कारीगरी से इस तरह भरी पड़ी थी कि सारे एशिया में इसके जोड़ की कोई दूसरी इमारत कहीं न थी।

समरक़न्द की सैर करनेवाले पर्यटक गुर-अमीर इमारतों में हमेशा दिलचस्पी लेते हैं। किसी ज़माने में यहां पर संगमरमर के फ़र्शवाले एक आंगन के दोनों ओर मदरसा और खानक़ाह बने थे। ये मुहम्मद सुलतान के बनवाये हुए थे। इनमें पच्चीकारी की सुन्दर कारीगरी थी और कोनों पर गुम्बददार पतली मीनारें खड़ी थीं। सन् १४०४ में इमारतों की इस लड़ी में एक और कड़ी जोड़ी गयी। यह था अठकोना मक़बरा जो दक्षिणी पार्श्व में बना था। मक़बरे के ऊपर खरबूज़ानुमा गुम्बद था। यही तैमूरी खानदान के लोगों का मक़बरा था। ख़ुद तैमूर, उलूग़बेक और खानदान के दूसरे व्यक्तियों को यहीं दफ़नाया गया है।

शाह-ए-ज़िन्दा मज़ार भी देखने लायक़ इमारतें हैं। प्राचीन अफ़ासियाब के खंडहरों के नीचे, दक्षिणी ढलुवान पर ये इमारतें खड़ी हैं। ग्यारहवीं और बारहवीं सदियों में ये इमारतें क़ासिम इबन अब्बास की क़ब्र के चारों ओर बनायी गयीं। क़ासिम इबन अब्बास के बारे में यह दंतकथा प्रचलित है कि वह पैग़म्बर मुहम्मद साहब का चचेरा भाई था।

सामन्त घरानों के लोगों की क़ब्रें ख़ास तौर से १४ वीं और १५ वीं सदियों में बनीं और ख़ूब महफ़ूज़ हैं। इन क़ब्रों की बाहरी शिल्पकारी में आश्चर्यजनक विविधता पायी जाती है। रंग भी एक दूसरे से ख़ूब मेल खाते हैं। सारी कारीगरी में हाथ की सफ़ाई और बारीकी देखते ही बनती है।

एक विशाल सड़क चुपान अता शिखर तक जाती है जहां उलूग़बेक ने अपनी वेधशाला का निर्माण किया था। सन् १४२८-२६ में निर्मित यह वेधशाला अपने समय में संसार की एक सबसे बड़ी वेधशाला थी। यह इमारत एकदम गोल आकार की थी। इस दृष्टि से यह समरक़न्द की दूसरी इमारतों से भिन्न थी। वह तीन मंज़िलों की और सौ फ़ुट ऊंची थी। उन दिनों की दृष्टि से यह बहुत भारी इमारत थी, ज़रूर। वेधशाला के संगमरमर के षष्ठक का व्यासार्द्ध १३० फ़ुट से अधिक था। आज तक यह सुरक्षित रखा गया है। वह मध्याह्न रेखा के साथ साथ ठीक ठीक उभरता गया है और उसकी संगमरमर की सिल्लियों का मोड़ आश्चर्यजनक रूप से सही है। कोई सौ विद्वान इस वेधशाला में उलूग़बेक के नेतृत्व में काम करते थे। उन्होंने महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक खोज की और एक नक्षत्र-सारणी तैयार की। इस सारणी में नक्षत्रों की स्थिति सही सही दी गयी थी और यह संसार भर में विख्यात हो गयी।

ये सब भवन अब राष्ट्रीय स्मारक हैं और राज्य के

संरक्षण में हैं। राज्य इनकी देखभाल और सुरक्षा की व्यवस्था करता है। इनकी बहाली का काम सोवियत काल में ही सुव्यवस्थित ढंग से शुरू किया गया। इस काम में करोड़ों रूबल खर्च किये गये हैं। कुछ स्मारकों का जीर्णोद्धार हो चुका है। दूसरों का जीर्णोद्धार हो रहा है।

समरक़न्द शहर के कई स्थान क्रान्ति की घटनाओं से उनके सम्बन्ध के कारण उल्लेखनीय महत्त्व के हैं। स्टेशन चौक में व्लादीमिर लेनिन का स्मारक बना हुआ है। शहर के बीच में 'स्वतन्त्रता' स्मारक खड़ा है जिसकी नींव सन् १९१९ में महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की विजय के उपलक्ष्य में रखी गयी। गोर्की सड़क पर 'विजय' स्तूप खड़ा है। महान देशभक्त युद्ध में सोवियत जनता की विजय के उपलक्ष्य में यह स्तूप निर्मित हुआ।

समरक़न्द के उद्योग। सोवियत काल में समरक़न्द का कायापलट-सा हो गया है। उसमें ऐसी जवानी आ गयी है कि पहिचान के बाहर। इस समय तो वह उज़्बेक जनतन्त्र के सबसे प्रमुख औद्योगिक नगरों में एक है।

क्रान्ति से पहले समरक़न्द शहर में थोड़े-से छोटे-मोटे व्यवसाय चलते थे। कृषि पदार्थों का विधायन इनका मुख्य काम होता था। आज के समरक़न्द में तो दर्जनों कारखाने हैं जिनका वार्षिक उत्पादन-मूल्य डेढ़ अरब रूबल से अधिक

है। पहले शहर में एक भी धातु-क़ारख़ाना नहीं था। लेकिन इस समय वहां लेनिन 'लाल इंजन' मोटर पुर्ज़ों का कारखाना है जो ट्रैक्टरों और मोटर-गाड़ियों के पुर्जे बनाता है और 'किनाप' कारख़ाना सिनेमा के उपकरण और बिजली के सामान तैयार करता है। इनके अलावा तीन मरम्मत के कारखाने हैं जो ट्रैक्टरों और मोटर-गाड़ियों के इंजनों की मरम्मत करते हैं, खान-खुदाई की भारी मशीनें ठीक करते हैं और भिन्न भिन्न प्रकार के धातु के सामान बनाते हैं।

छोटे उद्योगों में रेशम की कताई और बुनाई की मिलें, बुने वस्त्र-फ़ैक्टरी, लिबास बनाने की फ़ैक्टरी, चमड़ा सिझाने की फ़ैक्टरी, जूता-फ़ैक्टरी आदि मुख्य हैं। सभी उद्योगों का विस्तार हो रहा है और आधुनिकतम मशीनें उनमें लगायी जा रही हैं। अख़ूनबावायेव चमड़ा-फ़ैक्टरी का हाल ही में पुनर्निर्माण हुआ।

खाद्य-उद्योग की कई फ़ैक्टरियां हैं। एक भराई-फ़ैक्टरी है जहां से करोड़ों डिब्बों और बोतलों में बन्द खाद्यपदार्थ सारे देश में भेजें जाते हैं। मेवे और समरक़न्द की मशहूर किशमिश इनमें मुख्य हैं। इसके अलावा मकारोनी-फ़ैक्टरी, चाय-भराई-फ़ैक्टरी, गोश्त और दूध विधायन कंबाइन, शराब और बियर बनाने की भट्ठियां और कितने ही दूसरे कल-कारख़ाने शहर में हैं।

पुराने व्यवसायों का पुनर्निर्माण करने के साथ साथ समरक़न्द के लोग नये कारखाने भी बना रहे हैं। हाल ही में शहर के बाहर के इलाक़े में रासायनिक खाद का एक कारखाना बनाया गया। इसमें काम करनेवाले कामगारों के लिए नये मकान बने हैं जिनमें पांच हज़ार से अधिक लोग रहते हैं। इस कारखाने का और विस्तार करने की योजना है। पलंग बनाने की एक फ़ैक्टरी शहर के बाहर बन रही है। एक जूता-फ़ैक्टरी की सुव्यवस्थित इमारतें बन चुकी हैं। फ़ैक्टरी में आधुनिकतम मशीनें लगायी जा रही हैं। समरक़न्द के सभी कारखानों को बुखारा से आनेवाली नैसर्गिक गैस सपलाई की जायेगी। इसके लिए आवश्यक परिवर्तन सभी कारखानों में किये जा रहे हैं।

दरग़ाम की बड़ी नहर पर कई पन-बिजलीघर बनाये जा रहे हैं। इनमें से दो तो अभी चालू हो चुके हैं। ये हैं तालीगुलान और खिशरौस के पन-बिजलीघर। दो और बन रहे हैं।

उच्च शिक्षा का केन्द्र। वर्तमान समरक़न्द प्रदेश भर में क्रान्ति से पहले कुछ मिलाकर सिर्फ़ २१ मामूली स्कूल थे जिनमें १,०८० विद्यार्थी पढ़ते थे। लेकिन आज तो सिर्फ़ समरक़न्द शहर में चालीस स्कूल हैं जिनमें कुल २६,००० से अधिक विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। इनमें २७ दस वर्ष की पढ़ाई

के माध्यमिक स्कूल हैं। इनके अलावा जवान कामगारों के लिए १२ शाम के स्कूल हैं।

समरक़न्द हर दृष्टि से उच्च शिक्षा केन्द्र कहलाने का अधिकार रखता है। शहर में पांच कालेज हैं और सोलह प्राविधिक एवं दूसरे व्यवसाय-प्रशिक्षण विद्यालय हैं जिनमें अर्थ-व्यवस्था की सभी शाखाओं के लिए विशेषज्ञ तैयार किये जाते हैं। इनकी कुल छात्र संख्या क़रीब २०,००० है।

अलीशेर नवाई विश्वविद्यालय शहर की सबसे बड़ी शिक्षा-संस्था है। यह उज़्बेक राज्य विश्वविद्यालय है। सुन्दर गोर्की सड़क पर इसके भव्य भवन खड़े हैं। विश्वविद्यालय की छात्र संख्या ७,००० से ऊपर है (इसमें पत्र-व्यवहार के छात्र भी शामिल हैं)। विश्वविद्यालय के २८ विभाग, ३६ प्रयोगशालाएं, एक ऐक्टिनोमीट्रिक स्टेशन (सूर्य किरणों के रासायनिक तत्त्वों का पता लगानेवाला यन्त्र), तीन संग्रहालय, एक वनस्पति वाटिका और एक पुस्तकालय है। पुस्तकालय में ५०,००० किताबें हैं। हर साल बहुत बड़ी संख्या में छात्र विश्वविद्यालय की शिक्षा पूरी करके निकलते हैं।

उज़्बेक कृषि-संस्थान को व० व० कूइबिशेव का नाम दिया गया है। खेती के सामूहीकरण के प्रारम्भिक वर्षों में इसकी स्थापना हुई थी। अब वह खेती विशेषज्ञों का महत्त्वपूर्ण संस्थान बन गया है। इसमें ३,००० से अधिक छात्र शिक्षा पाते हैं।

समरक़न्द में एक चिकित्सा विज्ञान-संस्थान और दो मेडिकल माध्यमिक विद्यालय हैं। पावलोव चिकित्सा विज्ञान-संस्थान में उसके स्थापनाकाल से अब तक ३,००० डाक्टर तैयार होकर निकले हैं।

उज़्बेक जनतन्त्र के एक वैज्ञानिक केन्द्र के रूप में समरक़न्द की महत्ता दिन पर दिन बढ़ रही है। अनुसन्धान का काम उच्च शिक्षा संस्थानों और विशेष संस्थानों में किया जा रहा है। कराकुल अनुसन्धान-संस्थान, मलेरिया और चिकित्सात्मक परोपजीवी विज्ञान अनुसन्धान-संस्थान, श्रेदेर फल और अंगूर की खेती और शराब बनाने के अनुसन्धान-संस्थान के परीक्षणात्मक फलोद्यान, कृषि ऋतुविज्ञान केन्द्र, रेशम के कीड़े चुनने और पालने का केन्द्र और भूकंप विज्ञान केन्द्र इनमें से कुछ हैं।

सांस्कृतिक जीवन। समरक़न्द में दो थियेटर हैं। एक में उज़्बेक भाषा में और दूसरे में रूसी भाषा में नाटक खेले जाते हैं। इनके अलावा, एक संगीतशाला, तेरह सिनेमाघर, तीन संस्कृति-भवन, एक अध्यापक भवन, अठारह क्लब तथा साठ पुस्तकालय हैं। पुस्तकालयों में कुल दस लाख से अधिक पुस्तकें हैं।

ग्रीष्म-ऋतु में दिन भर की गर्मी के बाद समरक़न्द के लोग गोर्की सड़क की छायादार वृक्षवीथी में, सार्वजनिक

चौकों में, शहर के तीन मनोरंजन पार्कों में और शहर के आस-पास की वन-वाटिका जैसे पार्कों में सायंकाल का समय बिताते हैं। खेल-कूद के शौक़ीनों के लिए तीन क्रीड़ांगण और दो व्यायामशालाएं बनी हुई हैं। हाल में एक कसरती भवन खोला गया है।

समरक़न्द में पांच समाचारपत्र छपते हैं। इनमें से दो प्रादेशिक पत्र हैं। ये हैं उज़्बेक पत्र 'लेनिन यूली' और रूसी पत्र 'लेनिन का पथ'। एक प्रादेशिक रेडियो-स्टेशन है जिसका संचालन एक स्थानीय समिति करती है। एक टेलीविजन पुनःप्रसारण केन्द्र भी है। टेलीविजन ट्रान्समीटर स्टेशन बन रहा है।

नगर की शोभा। वायुयान से समरक़न्द पहुंचनेवाले यात्री, हरित परिधान पहने नगर की शोभा देखकर आंखें भर सकते हैं। सड़कें हरियाली से ढकी हैं। सारा नगर बाग़-बग़ीचों से घिरा है। समरक़न्द में अलंकार वृक्षों और फलों के पेड़ों के बाग़ और फुलवारियां कुल ७५० एकड़ की हैं। पार्कों और सड़कों पर १६० एकड़ स्थान पर पेड़ लगाये गये हैं। क़िलेवाला मैदान अब वन-वाटिका में परिणत किया जा रहा है। गोर्की सड़क, केन्द्रीय मनोरंजन पार्क, 'झील' वाला बच्चों का पार्क सब बहुत ही रमणीक है। ऊंचे बबूल और थूया वृक्ष तथा हरे-भरे चिनार वृक्ष इनकी शोभा बढ़ाते हैं।

शहर में इतनी तब्दीलियां हुई हैं कि पहिचान के बाहर। 'पुराने' और 'नये' शहर के बीच की सीमा कभी की मिट चुकी है। कई सड़कों का पुनर्निर्माण हो रहा है। नये रिहाइशी मकान और कार्यालय भवन बराबर बनते जा रहे हैं। फलतः लेनिन सड़क, कार्ल मार्क्स सड़क आदि केन्द्रीय सड़कों की शोभा एकदम निखर उठी है।

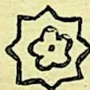
आइए, ज़रा कार्ल मार्क्स सड़क की सैर कर आयें। इधर कुछ वर्षों से इस सड़क पर काफ़ी संख्या में नये भवन बनते रहे हैं। सड़क के एक भाग में दुमंज़िले-तिमंज़िले मकानों की क़तारें खड़ी हैं। इनके बाद एक ऊंची इमारत खड़ी है। यह है कृषि-संस्थान का छात्रावास। इसके आगे कराकुल अनुसन्धान संस्थान का भवन खड़ा है। भवन के एक तरफ़ एक बड़ी-सी झील है। झील के चारों ओर बच्चों का सुन्दर सुविधाजनक पार्क है। समरक़न्द के युवकों ने यह पार्क बनाया था। भवन के दूसरी ओर 'दिनामो' क्रीडांगण है। आगे कार्यालय और दूकानें हैं। सुयोजित ढंग से बना, चंदोवे लगा बाज़ार है जहां कोलखोज़ के किसान अपनी चीज़ें बेचते हैं। सड़क के अंत में नयी बनी वन-वाटिका है। वाटिका के बायीं ओर 'स्पर्ताक' क्लब का क्रीड़ांगण है। बसें, ट्रालीबसें और टैक्सियां कार्ल मार्क्स सड़क से होकर गुज़रती हैं।

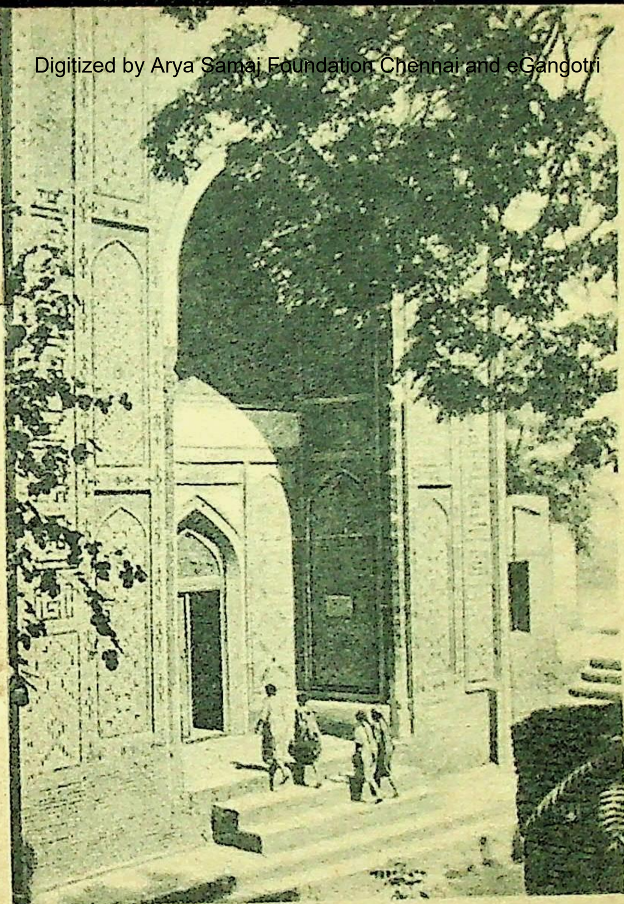
लेनिन सड़क तो किसी पार्क के बीच बनी वृक्षवीथी-सी

लगती है। यही शहर की मुख्य सड़क है। यहां पर दूकानें हैं, एक होटल है, रेस्त्रां, कफ़े, सिनेमाघर, उज़्बेक और रूसी ड्रामा थियेटर और कान्सर्ट हॉल हैं। इस सड़क के एक छोर पर एक तरफ़ गोर्की पार्क है और दूसरी तरफ़ सार्वजनिक उद्यान। कसरती भवन नाम की एक बड़ी व्यायामशाला हाल में खुली है। इसके पास ही वह स्थान है जहां सिनेमास्कोप का खुला मंच बनेगा।

इस तरह हर सड़क से गुज़रते हुए हम देखते हैं कि नयी जीवन-प्रणाली कैसे प्रगति कर रही है। हर जगह हम देखते हैं कि आम सोवियत जनता का कितना ख्याल रखा गया है, लोगों की घरेलू और रोज़मर्रे की ज़रूरतें किस तरह पूरी की गयी हैं।

सोवियत संघ के विभिन्न भागों से और विदेशों से पर्यटक लोग समरक़न्द देखने के लिए आते रहते हैं। 'रेगिस्तान' होटल और रेस्त्रां में निवास और भोजन की सुन्दर व्यवस्था है। सोवियत सड़क पर 'इंटूरिस्ट' होटल का निर्माण पूरा होने को है। शहर में 'इंटूरिस्ट' एजेंसी का एक कार्यालय है।

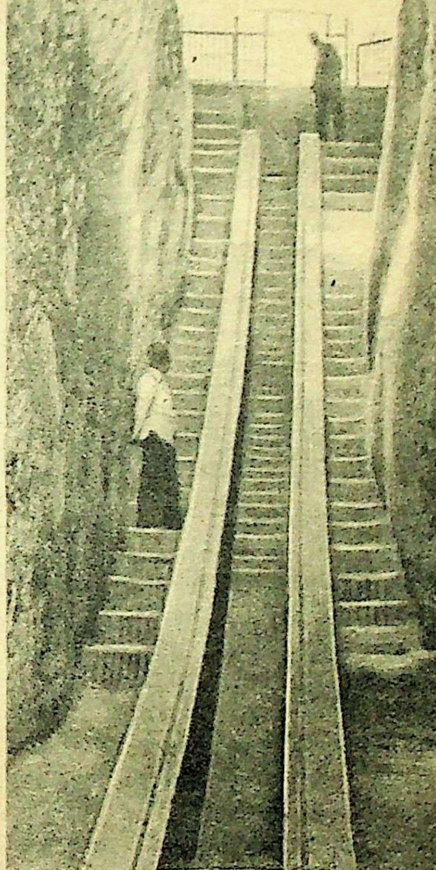




शाह-ए-ज़िन्दा मज़ार का प्रवेश द्वार

उलूगबेक मदरसा





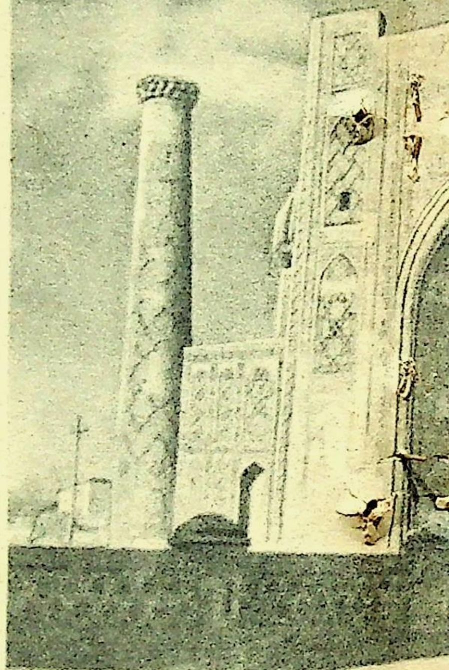
उलूगबेक वेधशाला का षष्ठक



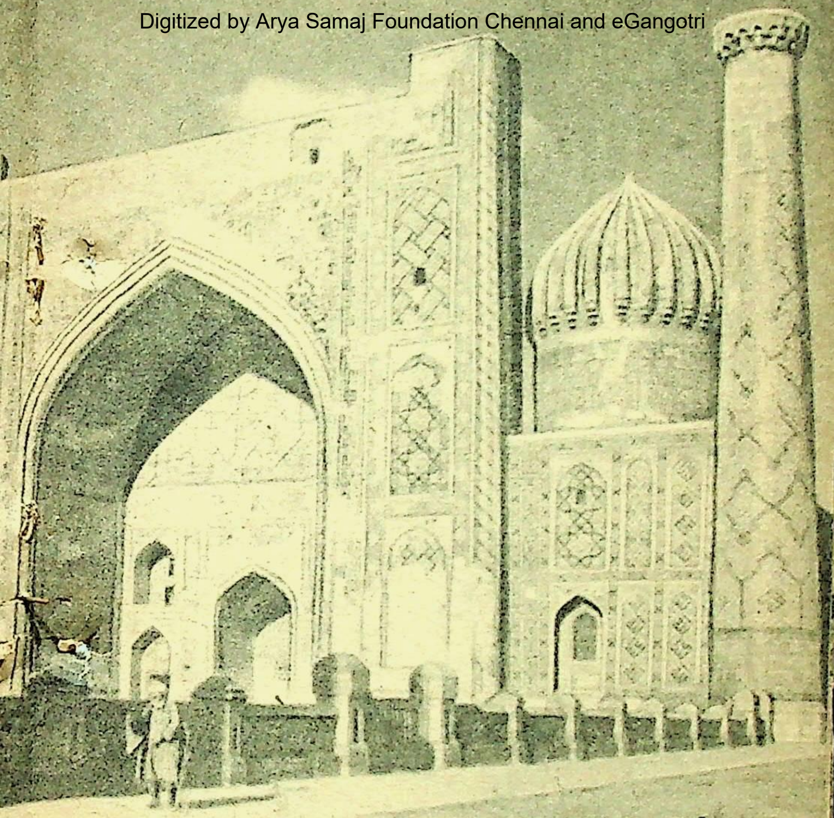
गूर-अमीर मक़बरा

तिलाकारी मदरसा

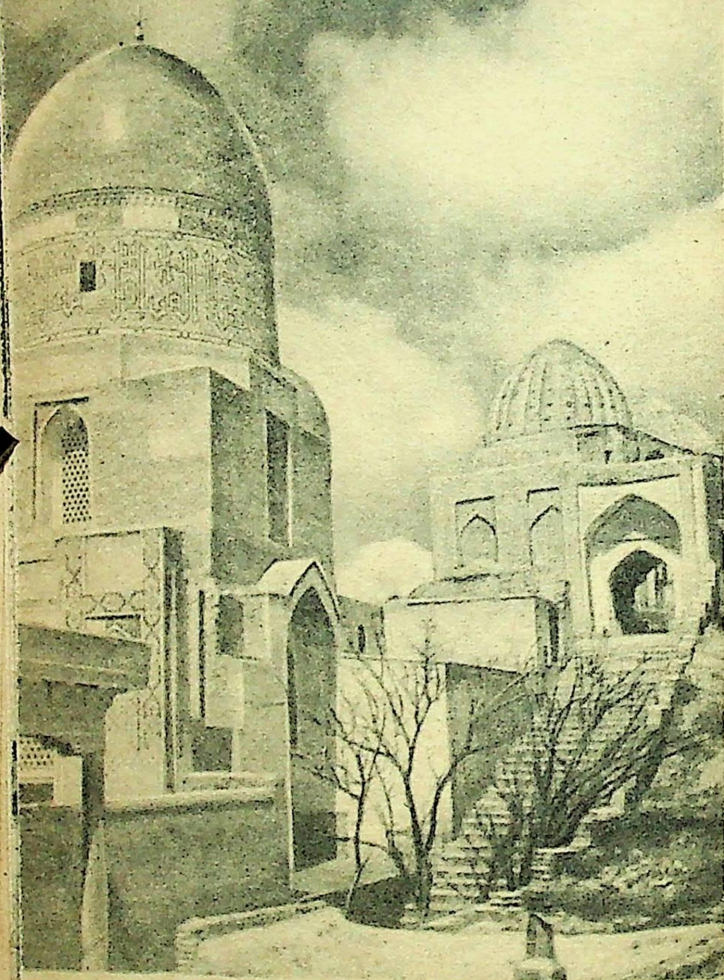




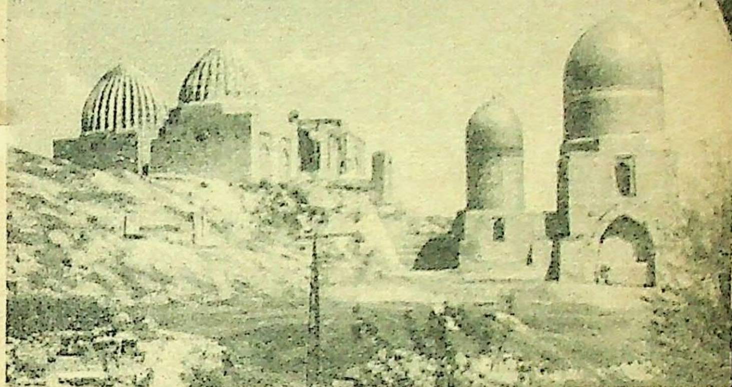




शेर-दार मदरसा

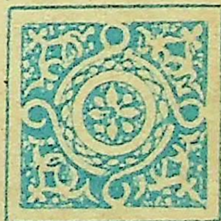


शाह-ए-ज़िन्दा मज़ार, क़ाज़ी-ज़ादा रूमी का मक़बरा

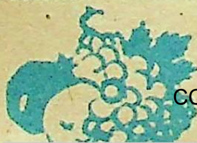


शाह-ए-जिन्दा मज़ार का दृश्य





समरक़न्द अपने फलों के लिए मशहूर है। फल बटोरे जा रहे हैं





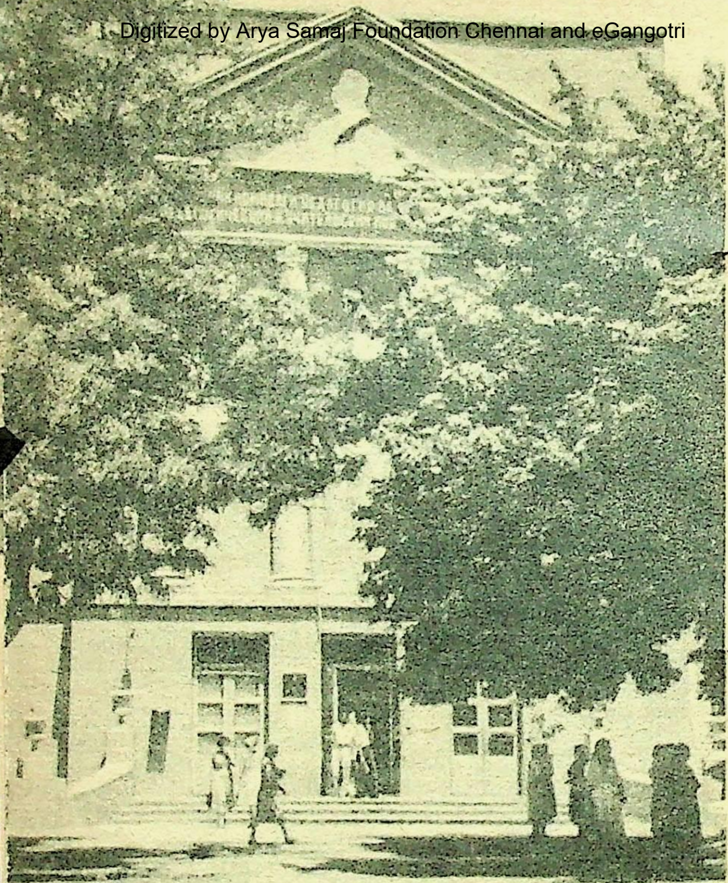
इस खाद्य विधायन कारखाने में हर साल करोड़ों
डिब्बों और बोतलों में खाद्य पदार्थ भरे जाते हैं

'किनाप' कारखाने के कामगारों के लिए नये
रिहाइशी मकान



चाय-भराई फ़ैक्टरी





भाषाविज्ञान विभाग, उज्बेक राज्य विश्वविद्यालय



उज़्बेक़ राज्य विश्वविद्यालय



समरकन्द चिकित्सा - विज्ञान संस्थान
का प्रधान भवन



चिकित्सा - विज्ञान संस्थान का चिकित्सालय

किताबों की दूकान में गाहकों की भीड़ हर वक़्त
लगी रहती है



गोर्की बुलवार्ड



कसरती - भवन



समरक़न्द के शानदार उपनगर में



'शर्क़ यूल्दूज़ी' सिनेमाघर, ४०, लेनिन सड़क

'रोदिना' सिनेमाघर, ४६, लेनिन सड़क

गोर्की केन्द्रीय मनोरंजन पार्क, प्रधान द्वार, लेनिन सड़क

'झील' वाला बच्चों का पार्क, कार्ल मार्क्स और एन्गेल्स सड़क के नुक्कड़ पर

'स्पर्ताक' क्रीड़ांगण, ४५, अख़ूनबाबायेव सड़क

'स्वतन्त्रता' स्मारक, लाल चौक

'विजय' स्तूप, गोर्की बुलवार्ड

प्राचीन भवन – उलूग़बेक मदरसा, शेर-दार, तिलाकारी और चारसू, रेगिस्तान चौक

बीबी ख़ानुम जामा मसजिद और बीबी ख़ानुम मक़बरा, ताशक़न्द सड़क

शाह-ए-ज़िन्दा भवन-समूह, कोजेवेन्नाया सड़क

गूर-अमीर, रूहाबाद और आक़-सराय मक़बरे, क़िज़ील तांग सड़क

इशरत-खाना और अब्द-ए-दरून भवन-समूह, पंजक़न्द राजमार्ग

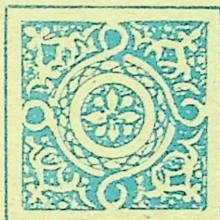
उलूग़बेक वेधशाला, ताशक़न्द राजमार्ग

'रेगिस्तान' होटल, ३६, लेनिन सड़क

'रेगिस्तान' रेस्त्रां, "

कफ़े, ५२, लेनिन सड़क





18

Аэропортга бориладиган йўл

Улуғбек обсерваториясига бориладиган йўл

...ЧАСИ

ДОҒБЕТ КЎЧАСИ

КОМСОМОЛ КЎЧАСИ

17

16

ТОШКЕНТ КЎЧАСИ

15

ПАНЖИКЕНТ КЎЧАСИ

...СТОН КЎЧАСИ

ОМОНКЎТАНГА бориладиган йўл

1 Меҳмонхона - Ресторан	10 Марказий маданият ва истироҳат парки
2 Почта	11 Рус драмтеатри
3 „Шарқ юлдузи" кинотеатри	12 Безгак ва медицина паразитология институти
4 „Кўл" парки	13 Ўзбекистон давлат университети
5 Қоракўлчилик илмий текшириш институти	14 Гўри Мир
6 Маданият ва санъат тарихи республика музейи	15 Регистон
7 Ўзбек драмтеатри	16 Бибихоним масжиди
8 Пушкин номидаги область кутубхонаси	17 Шоҳизинда
9 Концерт зали	18 Помология боғи

САМАРҚАНД


ОКТЯБРЬ КЎЧАСИ
ЭНГЕЛЬС КЎЧАСИ
ЛЕНИН КЎЧАСИ
КАРЛ МАРКС КЎЧАСИ
ФРУНЗЕ КЎЧАСИ
ЎЗБЕКИСТОН КЎЧАСИ
М. ГОРЬКИЙ БУЛЬВАРИ
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14

1 р. 45 к.

ГОСИЗДАТ УзССР
Ташкент—1958

САМАРКАНД
На языке хинди

Формат 70Х92 . Тираж 3000. 1,46 усл. печ. л.
Типолитография № 4 Главиздата Министерства
культуры УзССР. Заказ № 851.